Vol 6 Issue 10 July 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | JULY - 2017

धूमिल की कविता में ग्रामीण–बोध

मनजीत कौर
पीएच.डी. शोधार्थी , भाषा विज्ञान और पंजाबी कोशवारी विभाग ,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब)

प्रस्तावना :'–

ग्रामीण–बोध एक ऐसी संकल्पना है जिसमें ग्रामीण वातावरण, किसानी परिवेश के साथ–साथ श्रम साधना के लिए तत्पर भारतीय संस्कृति की झलक मस्तिष्क में उभरने लगती है। प्रायः नगरीय लोग गांव के लोगों को गंवार समझते हैं। ग्रामीण जन के प्रति उपेक्षा का यह भाव काफी पहले से समाज में व्याप्त था, लेकिन आधुनिक समय में यह भाव और भी गहरा हो गया। समाजवाद के कारण पनपी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ने तो स्वाधीनता के बाद ही देहाती और शहरी जीवन की खाई को बढ़ा दिया है। शहरी आज भी अपने को अधिक समझदार व शिष्ट समझता है और ग्रामीण को तिरस्कृत भाव से देखता है। लोकतन्त्र के बाद भी यह फासला बढ़ता गया। शहरी व ग्रामीण सभ्यता, संस्कृति के बीच विरोधाभास का एक और कार यह भी है कि दोनों अपने–अपने समाज व संस्कृति के श्रेष्ठत्व की कल्पनाओं से चिपकते रहते हैं।

ग्रामीण–बोध की संकल्पना मात्र से ही ऐसे परिवेश का परिदृश्य मस्तिष्क में उभरने लगता है जिसमें खेत–खलिहान, फसल बोते या काटते किसान, गाय, बैल व भेड़–बकरी की आवाज, फल–फूलों की खुशबू मेहनत करते पसीने से सराबोर होते स्त्री–पुरुष और चूल्हे–चौके में काम करते बच्चे सभी कुछ शामिल हैं। ग्रामीण परिवेश का चित्रण वही कर सकता है जिसने इस परिवेश को जिया हो, भीगा हो या अनुभव किया हो जैसे– ''किसी कलाकार द्वारा मनाया गया पहाड़ का चित्र और सामान्य पहाड़ चित्रकार में अन्तर होता है, क्योंकि चित्रित पहाड़ चित्रकार के अपने सौन्दर्यानुभव का परिणाम है। उसके पीछे अनुभवों की प्रेरणा है।''[1] अर्थात् ग्रामीण–बोध का वास्तविक अनुभव गांव के उस ठोस धरातल पर ही सम्भव है जिसमें परिश्रम ही जीवन का पर्याय है। ग्रामीण लोगों की अपनी संस्कृति, संस्कार, रहन–सहन संर्घषरत जीवन ही पहचान है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में हिन्दी कविता विभिन्न परिस्थितियों व प्रवृत्तियों के साथ आगे बढ़ती गई और कविता में समय के साथ–साथ आगे बढ़ती गई और कविता में समय के साथ–साथ नये आयाम दिखाई देते रहे। स्वतन्त्रता के बाद की हिन्दी कविता में नवीनता के प्रति आग्रह तो है, लेकिन आजादी के बाद जिन आदर्शों, मूल्यों व सुविधाओं की परिकल्पना आम आदमी ने की थी वे सब कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे और जिन विषयों व विद्रूपताओं से छुटकारा पाने का हम इंतजार कर रहे थे वे सब तो यथावत हैं फर्क सिर्फ इतना है कि विदेशी शासकों की जगह देशी नेताओं व पूंजीपतियों ने ले ली। जगदीश नारायण श्रीवास्तव ने लोकतन्त्र की स्थापना को जनता के लिए न मानते हुए लिखा है– ''लोकतन्त्र जनता का नहीं, पंजीपतियों, भू–स्वामियों, नेताओं का था, इस त्रिगुट को लोकतन्त्र की अपेक्षा थी। अतः उसे लोगों पर लाद दिया गया है।''[2]

सन् 1960 के बाद हिन्दी कविता ने एक नया मोड़ लिया। इसने समाज का लेखा–जोखा प्रस्तुत कर समकालीन राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक विसंगतियों तथा विद्रूपताओं का बेबाक चित्रण प्रस्तुत करती हैं। समकालीन कविता की संरचना के लिए, रचनाकारों ने आम आदमी के प्रश्नों, सम्बन्धों व अनुभवों की रचना का विषय बनाया। समकालीन कविता ने अपनी पूर्ववर्ती विचारधारा व कलेवर को पीछे छोड़कर नवीनता के प्रति आग्रह लेकर जन सामान्य को उभारने का प्रयास किया। सन् साठ के बाद के प्रबुद्ध कवियों ने उपेक्षा व अन्याय का खुलासा किया। समकालीन कविता का केन्द्रीय विषय आम आदमी है। धूमिल की कविता 'मोचीराम', रघुवीर सहाय की 'रामगुलाम' और रामसरन, कुमार विकल की 'तरक्की राम', ज्ञानेन्द्रपति की 'रामेसर' आदि काव्यनायक सामान्य लोग या आम आदमी ही हैं। समकालीन कविताओं में धूमिल, जगूडी, ज्ञानेन्द्रपति, विकाल, मंगलेश, राजेश आदि ने शोषण चक्र में पिसते, जिम्मेवारियों के बोझढोते, सामाजिक औपचारिकताओं को निभाते और पेटपूर्ति की तलाश में टूटते, खपते हुए आम आदमी के दुःख–दर्द, पीड़ा और छटपटाहट को संस्पर्श किया है।

धूमिल के काव्य में ग्रामीण बोध – सामाजिक संदर्भ सुदामा पाण्डेय धूमिल समकालीन कविता के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। धूमिल एक ऐसी प्रतिभा है जिसने समकालीन हिन्दी साहित्य को नई पहचान दी। ''सनिल की कविता का आरम्भ वास्तव में उस बिन्दु से होता है जब युवा लेखकों के बीच प्रखर सामाजिक चेतना व प्रतिबद्धता के कवि युक्तिबोध की कविता व व्यक्तित्व की लोकप्रियता बढ़ने लगती है। धूमिल कविताओं द्वारा सीधे सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप करता है।''[3]

धूमिल ने समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण किया है, लेकिन विशेष तौर पर कवि की मध्यवर्गीय व निम्नवर्गीय परिवार की कठिनाइयों व समस्याओं का चित्रण करना अच्छा लगता है। धूमिल मानव जीवन का यथार्थपरक चित्रण करते हैं और कहते हैं कि व्यक्ति को दूसरों के साथ सामंजस्य रखना चाहिए–

उसे जिन्दगी और जिन्दगी के बीच कम से कम
फासला रखते हुए जीना था
यही वजह थी कि वह
एक ही निगह में हीरा आदमी था और दूसरों
निगाह में कमीना आदमी था।'' [4]

कवि को ज्ञात है कि ग्रामीण परिवेश में दाल–रोटी की क्या अहमियत है। कवि ने रोटी का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है जिसमें घर के भीतर का पूरा दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

कुरछुल
बटलोही से बतियाती है और चिमटा
तवे से मचलता है
चूल्हा कुछ नहीं बोलता
चुपचाप जलता है और जलता रहता है

धूमिल की कविताओं में सामाजिक परिवेश के भिन्न–भिन्न सन्दर्भ और ग्रामीण–बोध के विविध आयाम मिलते हैं।

आर्थिक सन्दर्भ – समकालीन हिन्दी कविता के कवियों ने आर्थिक वर्गीकरण को सामने लाने का प्रयास किया है। आज के समाज में आर्थिक मापदण्डों एवं धन–दौलत व रुपये पैसों की कसौटी पर वर्ग विभाजन सामाजिक अर्थव्यवस्था है। समकालीन समाज में मध्यवर्गी परिवारों में आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं आया। ''स्वतन्त्रता के बाद आर्थिक संकट का जो दौर आया उसमें अधिकांश मध्यवित्त परिवार उलझकर रह गए थे।'' [5]

धूमिल निम्न वर्ग की दयनीय आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है कि एक मध्यवर्गीय परिवार में एक छोटी–सी खुशी की खातिर वर्ष भर शोषण और आधा भोजन ही मिलता है–

''कुल रोटी तीन
खाने से पहले मुंह दुब्बर
पेट भर पानी पीता है
और लजाता है
कुल रोटी तीन
पहले उसे थाली खानी
फिर वह रोटी खोता।'' [6]

धूमिल कहते हैं कि निम्नवर्गीय किसान का इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि सारा दिन कड़ा परिश्रम करने के बाद भी पेट भर खान न मिले।

राजनीतिक सन्दर्भ – धूमिल मूलतः ग्रामीण संस्कारों के कवि हैं। उन्हें परम्परागत राजनीतिक अन्तर्विरोधी की समझ है और रसी कारण वे जन सामान्य को राजनीतिक षड्यन्त्रों से कवि बार–बार आगाह करता है। ''राजनीतिक अन्तर्विरोध आज इतने अधिक प्रसारित हैं, जिनको सार्थकता से समझना वर्तमान युग की एक महत्त्वपूर्ण तलाश है।''[7] धूमिल की राजनीतिक समझ और बौद्धिकता उन्हें अपने परिवेश के और अधिक नजदीक लाती है। स्वतन्त्रता के बाद आम ग्रामीण ने जिस सुशासन की परिकल्पना की थी वह स्वप्न बनकर रह गई। वर्ग–वैषम्य, शोषण, दमन–चक्र आदि कुचक्र पूर्ववत रह गए और पूंजीपतियों व राजनीतिज्ञों ने गरीबों व असहाय लोगों पर अपना शिकंजा और तेज कर दिया। गांधीवाद व राम राज्य की कल्पना मात्र घोषणा तक ही सीमित रह गई, जैसे–

''अपने दिमाग के आत्मघाती एकान्त में
खुद को निहत्था साबित करने के लिए
मैंने गांधी के बीनों बन्दरों की हत्या कर दी है।'' [8]

अर्थात् आज के बदलते परिवेश में गांधी के अहिंसावाद की सार्थकता अर्थहीन हो गई है क्योंकि आज वह बुरा देख रहा है, सुन रहा है, कह रहा है। गांधीवादी नीतियां अप्रासंगिक हो गई हैं। धूमिल ग्रामीण परिवेश के कवि होने के कारण साधारण जनता से बेहद लगाव रखते हैं। इसी कारण उनकी कविता में ग्रामीण बोध के विविध राजनीतिक सन्दर्भ परिलक्षित होते हैं।

सांस्कृतिक सन्दर्भ – भारतवर्ष समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा को लेकर विश्व–विख्यात है, लेकिन स्वातन्त्र्योत्तर काल में हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को पूर्णतया सुरक्षित नहीं रख पाये इसका कारण है कि नैतिक मूल्यों का पतन व मानव मूल्यों की अस्थिरता और मानव की स्वार्थपरक दृष्टि। ''समाज में बढ़ती अर्थ की महत्ता के कारण मानवीय मूल्यों में परिवर्तन हुआ है। समाज में सत्य, अहिंसा, परोपकार, ईमानदारी, मित्रता, दया, करुणा, सहयोग जैसे नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रति समान और आदर का भाव लुप्त हो गया।'' [9] धूमिल समकालीन कविता के उन महत्त्वपूर्ण कवियों में से है जिन्होंने अपने देश, अपनी मिट्टी व अपनी संस्कृति को अपनी कविता में स्थान दिया। धूमिल की कविता समसामयिक समाज को

सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ व्याख्यायित करती है, जैसे–

''कल भूखे गर्भाशय की ओट से
एक युद्ध, अपराधी की
घोषणा होगी
ओ माँ! ओ बहन!
ढिल्लो में पानी भर लो
रोटियां कठौती में बहा दो
और उन्हें पत्थर के चौाके से ढँक दो।'' [10]

कवि ने कहा है कि भले ही समय कितना भी कठिन था विपरीत हो संस्कार या रिश्ते ही बुरे वक्त में काम आते हैं।

भाषिक सन्दर्भ – समकालीन हिन्दी कविता ने भाषा के पुराने नियमों को तोड़कर सीधा जन सामान्य से जोड़ने का प्रयास किया। धूमिल की भाषा सरल और सटीक भाषा है और रौली बेजोड़ है। धूमिल की भाषा समसामयिक विषमताओं को उजागर करने में सक्षम है। धूमिल का मत है कि ऐसा मानना गलत है भाषा पर किसी जाति अथवा समुदाय का हाथ है जबकि भाषा की चुप्पी और चींख दोनों अलग–अलग फर्ज अदा करती हैं। धूमिल से 'भाषा की रात' शीर्षक कविता में भाषा पर विस्तार से चर्चा की है। कवि कहते हैं कि लोग स्वार्थी हो गए हैं। अपने ढंग से भाषा को बदलते हैं, जैसे–

''उसके लिए केवल तमाशा है
बिना किसी क्षोभ के
उसने अपने तख्तियों के अक्षर बदल
दिये हैं
क्योंकि कवियों की भाषा तो सहमति की
भाषा है
देश डूबता है तो डूबे
लोग ऊबते है तो ऊबें
जनता लट्टू हो।'' [11]

उपरोक्त आधार पर धूमिल ने अपनी कविताओं में जन सामान्य की भाषा का प्रयोग किया है। धूमिल ग्रामीण संस्कारों का कवि हैं और यही कारण है कि उनकी कविता में ग्रामीण बोध के विविध आयाम परिलक्षित होते हैं जिनमें ग्रामीण बोध के सामाजिक, आर्थिक, राजनीकि, सांस्कृतिक व भाषिक संदर्भ विद्यमान है।

सन्दर्भ –

1.ओम अवस्थी, रचना प्रक्रिया, पृ. 149
2.जगदीश नारायण श्रीवास्तव, समकालीन कविता पर बहस, पृ. 37
3.कुमार कृष्ण, दूसरे प्रजातन्त्र की तलाश में धूमिल, पृ. 69
4.धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ. 10
5.महावीर वत्स, साठोत्तरी कविता में सांस्कृतिक चेतना, पृ. 48
6.धूमिल, कल सुनना मुझे, पृ. 17
7.राकेश कुमार, धूमिल की काव्य–चेतना : विविध आयाम, पृ. 86
8.धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ. 17
9.महावीर वत्स, साठोत्तरी कविता में सांस्कृतिक चेतना, पृ. 30
10.धूमिल, सुदामा पांडे का प्रजातन्त्र, पृ. 38
11.धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ. 95

मनजीत कौर
पीएच.डी. शोधार्थी , भाषा विज्ञान और पंजाबी कोशवारी विभाग ,पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com